वन्दे मातरम् के 150 वर्ष

— प्रो. रवि शर्मा

वंदे मातरम् एक ऐसा राष्ट्रीय गीत जिसकी गूँज 150 वर्ष पहले समस्त भारत की एकता का प्रतीक बन गया था। तभी से यह गीत समस्त भारत में अत्यंत मनोयोग से गया जाता रहा है। संगीत सीख रहे विद्यार्थी तो इसे अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अवश्य रूप से गाते हैं। यह गीत क्यों और किन परिस्थितियों में लेखक द्वारा लिखा गया था – इसका ज्ञान भी केवल संगीत के विद्यार्थियों को ही नहीं अपितु सभी देशवासियों को होना चाहिए।

इस गीत रचना के पीछे एक विवाद है जो की 1873 में घटित हुआ था। यह घटना बंगाल के मुर्शिदाबाद की है, जहाँ एक क्रिकेट मैच चल रहा था जिसका नेतृत्व बहरमपुर के कैनटोनमेंट के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल डफिन कर रहे थे। उसी दिन शाम को मुर्शिदाबाद जिला के डिप्टी कलेक्टर बँकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय अपनी पालकी से घर लौट रहे थे। पालकी को उठा रहे मज़दूर गलती से या बेध्यानी में क्रिकेट मैदान से होकर निकाल गए। जिससे मैच में व्यवधान पहुँचा। क्रोध में आकर कर्नल डफिन ने पालकी से बंकिमचंद्र को बाहर निकाला और उन्हें कई घूंसे मार दिए। यह घटना कई प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति में हुई थी, जिनमे प्रिंसिपल रॉबर्ट हैण्ड, रेवरेण्ड बार्लो, जज ब्रेनबिज, लालगोला के राजा योगेंद्र नारायण राय, दुर्गाचरण भट्टाचार्य तथा कई अन्य ब्रिटिश और भारतीय गणमान्य व्यक्ति शामिल था।

बंकिमचंद्र यह अपमान सहन नहीं कर सके। वे 16 दिसम्बर 1873 को मुर्शिदाबाद के जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर विण्टर की अदालत में कर्नल डफिन के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई। अंततः कर्नल डफिन ने अदालत में हाथ जोड़कर माफी माँगी।

यह भी कहते हैं कि गुप्त रूप से ब्रिटिश अधिकारियों ने बंकिमचंद्र की हत्या की साजिश रची थी। यह बात जब लालगोला के राजा योगेंद्र नारायण राय को पता चली तो बंकिमचंद्र को अपने लालगोला स्थित निवास स्थान पर आमंत्रित किया, जहाँ वे जनवरी 1874 में आकार रहने लगे।

लालगोला में बंकिमचंद्र चट्टोपाद्याय ने जगद्धात्री, दुर्गा और काली मंदिरों के दर्शन किये। वहीं उन्होंने यह विचार किया कि भारत को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक सूत्र में कैसे बाँधा जाए जो सबको एक कर दे। अंततः 7 नवंबर 1875 को बँकिंचन्द्र चैटर्जी ने वंदे मातरम् जैसी अमर रचना रची। यह वह मंत्र था जिसने कलांतर में भारतीयों में देश भक्ति की ज्योति जलायी और अंग्रेजों के मन में भय पैदा किया। "बंकिमचंद्र ने एक कालजयी उपन्यास लिखा 'आनंद मठ' जिसमें उन्होंने इस गीत को सम्मिलित किया और बहुत प्रसिद्धि मिली।" वे एक पत्रिका बंग दर्शन का प्रकाशन करते थे जिसमें यह कविता 1881 में प्रकाशित हुई, इसके पश्चात सम्पूर्ण कविता 1882 में आनंद मठ नामक उपन्यास में प्रकाशित हुई थी। (सिंह) तब इसमें छः छंद प्रकिशित हुए थे। मुख्यतः इसके पहले दो बंध ही लंबे समय तक गाए जाते रहे।

विष्णुपुर घराने के पंडित जदुनाथ भट्टाचार्य बंकिंचन्द्र के संगीत गुरु थे और वे उनसे नियमित रूप से संगीत की शिक्षा लेते थे। इस गीत को संगीत में बद्ध करने के लिए उन्होंने अपने गुरु से आग्रह किया था कि वे इस गीत को संगीतबद्ध करें। उन्होंने इसे काफी राग तथा तीनताल में निबद्ध किया था। अत्यंत जोशीला प्रवृत्ति तथा संस्कृत बंगाली मिश्रित भाषा ने इसे लोकप्रिय बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सर्वप्रथम कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर ने इसे 1896 में कलकत्ता में हुए काँग्रेस के अधिवेशन में गया था। उन्होंने वंदेमातरम के प्रथम दो छंदों को ही गया था। स्वतंत्रता आंदोलन का यह गीत प्रत्येक व्यक्ति का मूल मंत्र बन गया था। इस 1896 के काँग्रेस अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा इस गीत के बाद इसे अखिल भारतीय स्वीकृति मिली थी। जैसा की पहले भी बताया गया है की सम्पूर्ण पाठ में छः छंद हैं।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्॥
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्॥
वन्दे मातरम्॥

सप्तकोटिकण्ठकलकलनिनादकराले
द्विसप्तकोटिभुजैर्धृतखरकरवाले
के बोले मा तुमी अबले
बहुबलधारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीम् मातरम्॥
वन्दे मातरम्॥

तुमि विद्या तुमि धर्म।
तुमि हृदि तुमि मर्म।
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते तुमि मा शक्ति।
हृदये तुमि मा भक्ति।
तोमारै प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे॥
वन्दे मातरम्॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी।
नमामि त्वाम् नमामि कमलाम्
अमलाम् अतुलाम् सुजलाम् सुफलाम् मातरम्॥
वन्दे मातरम्॥

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम्॥
वन्दे मातरम्॥

वर्ष 1923 में पंडित विष्णु दिगम्बर ने काँग्रेस के अधिवेशन में कई मेम्बर्स के विरोध मे बाद भी वंदे मातरम् गया था। वे इसे काँग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में 1915 से गाते ही आ रहे थे। लेकिन मौलाना मोहम्मद अली जौहर जो कि काँग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे थे तथा उनके भाई शौकत अली खाँ ने विष्णु दिगम्बर द्वारा वंदेमातरम के गायन का विरोध किया था। उनका कहना था कि क्योंकि इस गीत में हिन्दू धर्म की स्तुति है इसलिए इसे मंच पर नहीं गया जाना चाहिए। इस पर पंडित पलुस्कर ने विरोध जताते हुए कह दिया कि यह एक जनसभा है, किसी एक धर्म का उपासना केंद्र नहीं। जिन्हें आपत्ति है, वे चाहे तो सभा छोड़कर जा सकते हैं। इसके बाद पंडित जी ने पूरा गाना सुनाया था। (अस्थाना)

वंदेमातरम् का संबंध बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से अत्यंत गहरा रहा है। पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के शिष्य पंडित ओंकार नाथ ठाकुर ने दस मिनट तक वंदेमातरम गया था। स्वतंत्र भारत की हवा में प्रातः 6:30 बजे इसका प्रसारण किया गया। भारत के स्वतंत्रता पर संसद भवन में मध्यरात्रि पर 14 और 15 अगस्त के बीच आजादी का उत्सव मनाने के लिए एक कार्यक्रम रखा गया। सरदार वल्लभभाई पटेल ने बी एच यू के संगीत एवं मंच कला संकाय के संस्थापक रहे पंडित ओंकारनाथ ठाकुर–उस समय मद्रास (चेन्नई) में थे–को वायरलेस संदेश भेजकर संसद में वंदेमातरम गाने का अनुरोध किया। इस पर पंडित ओंकार नाथ ठाकुर ने जवाब दिया कि वंदेमातरम के पूरे 22 पंक्तियों वाले रूप को ही गाएँगे। उनकी ये शर्त सरदार पटेल ने स्वीकार कर ली। पंडित जी विशेष विमान से दिल्ली पहुँचे थे और संसद भवन में मध्यरात्रि के समय वंदे मातरम् गया था। अगले दिन सुबह 6:30 बजे आकाशवाणी पर उनकी प्रस्तुति का प्रसारण किया गया तो पूरे देश में इस गीत की गूँज हो गई। (अस्थाना)

वंदेमातरम की इस यात्रा में मैडम भिकाजी कामा का योगदान नहीं भुलाया जा सकता। वर्ष 1907 में जर्मनी में आयोजित इंटरनेशनल सोशलिस्ट काँग्रेस में इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता का झण्डा फहराया था जिसके ऊपर 'वंदे मातरम' अंकित था। यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमित छाप छोड़ गई। (pib)

वंदे मातरम् संबंधी नए दिशा निर्देश

वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने के उपलक्ष में केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय गीत के सम्मान को बढ़ाने की दिशा में बड़ा निर्णय लिया है। अब राष्ट्रगान से पहले राष्ट्रगीत गाया जाएगा। स्कूलों में प्रातःकाल की शुरुआत राष्ट्रगीत से होगी। राष्ट्रगीत के दो नहीं बल्कि पूरे छः छंद गए जाएंगे। गृह मंत्रालय की ओर से जारी नए प्रोटोकॉल के अनुसार सरकारी कार्यक्रमों, स्कूलों आदि अहम आयोजनों में वंदे मातरम् का गायन अनिवार्य होगा।

28/1/2026 को गृह मंत्रालय की ओर से जारी नए निर्देशों के अनुसार, 'वंदेमातरम' के सभी छः छंदों को कुल 3:10 मिनट में गाना होगा। वहीं किसी कार्यक्रम में राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान दोनों का गायन होगा तो पहले वंदेमातरम गाना होगा। (ssconline)

सरकार ने यह निर्णय लिया कि 'वंदेमातरम' के 150 वर्ष होने के उपलक्ष में पूरे देश मे एक वर्ष तक चलने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की एक श्रंखला चलाई जाएगी। इस समरणोत्सव का उद्घाटन प्रधानमंत्री

श्री नरेंद्र मोदी ने 7/11/2025 को सुबह इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में उद्घाटन किया। जिसमें देश के विभिन्न भागों से आए 25000 प्रतिभागियों ने एक साथ 'वंदेमातरम' के सम्पूर्ण पाठ को प्रधानमंत्री की उपस्थिति में सस्वर गाया।

इस उपलक्ष में प्रधानमंत्री ने एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया।

राष्ट्रीय गीत कब जरूरी: गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देश यह निर्देश करते हैं कि आधिकारिक और सार्वजनिक कार्यक्रमों में राष्ट्रगान कैसे गाया या बजाया जाना चाहिए, जिसमें पूरे देश में एकरूपता, शालीनता और सम्मान सुनिश्चित हो सके।

1. गृह मंत्रालय के इस आदेश में यह अनिवार्य किया गया है कि जब भी किसी आधिकारिक कार्यक्रम या सभा में राष्ट्रगान गाया जाएगा, तो गीत का पूरा आधिकारिक संस्करण ही गाया जाएगा।
2. बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा लिखित, राष्ट्रगान में छह छंद हैं, जो मिलकर इसका पूर्ण आधिकारिक संस्करण बनाते हैं, जिसकी कुल अवधि लगभग 3 मिनट और 10 सेकंड है।

3. दिशा-निर्देशों में इस बात पर जोर दिया गया है कि राष्ट्रगान बजने या गाए जाने के दौरान सभी को सावधान मुद्रा में खड़ा होना चाहिए, सिवाय उस स्थिति के जब इसे किसी फिल्म/वृत्तचित्र के हिस्से के रूप में बजाया जा रहा हो।
4. आदेश में निर्दिष्ट है कि राष्ट्रगान निम्नलिखित समय के दौरान गाया जाएगा–

- नागरिक अलंकरण समारोहों में
- औपचारिक समारोह में राष्ट्रपति का आगमन/प्रस्थान
- राष्ट्रपति द्वारा रेडियो/टीवी पर राष्ट्र को संबोधित करने से पहले और बाद में
- औपचारिक समारोह में राज्यपाल का आगमन/प्रस्थान
- जब भी राष्ट्रीय ध्वज को परेड में लाया जाता है

5. वंदे मातरम् का आधिकारिक संस्करण निम्नलिखित अवसरों पर सामूहिक गायन में बजाया जाएगा–

- राष्ट्रीय ध्वज का फहराना
- सांस्कृतिक अवसर
- परेड के अलावा अन्य औपचारिक समारोह
- अनौपचारिक सार्वजनिक समारोहों में राष्ट्रपति का आगमन/प्रस्थान
- सरकारी कार्यक्रम
- सभी स्कूलों में

6. सभी विद्यालय अधिकारियों को ऐसे संरचित कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रगान के नियमित गायन को बढ़ावा दें, साथ ही साथ राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान को दैनिक पाठ्यक्रम के एक अभिन्न अंग के रूप में बढ़ावा दें।
7. जब कोई बैंड राष्ट्रगान बजाएगा, तो उससे पहले सात धीमी गतियों वाली ढोल की थाप बजेगी, जो धीरे-धीरे चरम पर पहुँचकर गीत शुरू होने से पहले धीमी हो जाएगी। गीत शुरू होने से पहले एक ताल का विराम होगा।
8. जिस भी समारोह में राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत का गायन होना हो, उसमें सर्वप्रथम वंदे मातरम् गाया जाएगा।

संदर्भ सूची

- आनंद मठ का पुनर्मूल्यांकन, गीता दुबे, सबलोग, अंक 143, जनवरी 2026
- यादें, हिमांशु अस्थाना, अमर उजाला ब्यूरो, वाराणसी, 10 दिसम्बर, 2025
- वंदे मातरम, विवाद और पुनर्पाठ, मृत्युंजय कुमार सिंह, सबलोग, अंक 143, जनवरी 2026
- https://www.vandemataram150.in/event-details/4246
- Accessed on 03 March 2026 at 12:43 PM
- https://www.pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=11804&reg=3&lang=2
- Accessed in 26th February 2026 9:27 PM
- https://www.theresource24x7.com Accessed on 03 March 2026 at 12:43 PM
- https://www.scconline.com/blog/post/2026/02/12/mha-issued-guidelines-on-singing-national-song-2026/ Accessed on 19th March 2026, 9:57 PM